© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 02 | January – March 2018

वाल्मीकि रामायण में राजनीतिक चिन्तन

हेमन्त शर्मा, शोधार्थी संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।

शोधसार : प्रस्तुत शोध पत्र में वाल्मीकि रामायण में राजनीतिक चिन्तन पर विचार विमर्श किया गया है। किसी भी देश या राष्ट्र की उन्नति के लिए उसका राजनीतिक दृष्टि से सुदृढ़ होना अत्यन्त आवश्यक है। ऐसी ही एक सुन्दर व सुदृढ़ राजनीतिक परम्परा हमें वाल्मीकि रामायण में देखने को मिलती है। प्रस्तुत शोध–पत्र में वाल्मीकिरामायणकालीन राजा व उसके विभागों का विवेचन किया गया है।

मुख्य बिन्दु : राजा, राजा का निर्वाचन, मन्त्री, धर्मविभाग, रक्षाविभाग, गृहविभाग, मन्त्रिपरिषद्।

भूमिका : राजनीति राज्य संबंधी नीति है। राजनीति में दो पद हैं– राज्य एवं नीति। राज्य पद राजन्+यत् से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है–राजा का क्षेत्र। इस प्रकार राज्य से तात्पर्य राजा के क्षेत्र या संस्था से है। नीति शब्द 'नी' धातु से क्तिन् प्रत्यय लगकर निर्मित हुआ है। नीति का अर्थ है– 'उचित निर्देशन'। इस प्रकार राजनीति का शब्दार्थ ''राज्य संबंधी उचित निर्देशन'' है। वाल्मीकि रामायण में रामकथा के माध्यम से तत्कालीन भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन आदि के विषय में विस्तार से विचार प्रस्तुत किए गये हैं। यह कृति मुख्य रूप से राजाओं के कार्यकलापों से संबंधित है। राजाओं के कार्यकलापों का आधार राजनीति होती है। रामायण में राजा, अधिकारी वर्ग, सामन्त, प्रजा और यहां तक कि ऋषि मुनि भी राजनीति के प्रभाव से प्रभावित है।

राजा : 'राजन्' शब्द राज् (शासन करना) से कनिन् प्रत्यय से बना है। इस प्रकार राजा का अर्थ शासन करने वाला या शासक होता है। भारतीय राजनीतिक विचारधारा से 'प्रकृति रंजनात्' राजा अर्थात् प्रजा के रंजन करने के कारण इसे राजा कहा गया है। जैसा कि रघुवंश महाकाव्य[1] और महाभारत[2] में निर्दिष्ट है। वाल्मीकि रामायण में राजा का लोक रंजन–कर्त्ता के रूप में वर्णन है। वाल्मीकि रामायण में राजा की उत्पत्ति विषयक कथा का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि पहले मानवीय प्रजा बिना राजा के थी। प्रजाजन ब्रह्मा के पास गए और किसी को राजा बनाने के लिए प्रार्थना की। ब्रह्मा ने क्षुप को प्रजा का आधिपत्य दिया और उसे राजा बनाया।[3] रामायण के उल्लेख से स्पष्ट है कि राजा रहित राज्य में योग क्षेम नहीं होता, स्त्री एवं सम्पत्ति सुरक्षित नही रहती और सर्वत्र अशान्ति का वातावरण रहता है।[4]

राजा का निर्वाचन : वंशपरम्परा, ज्येष्ठता, योग्यता और शिक्षा के आधार पर राजकुमार राजपद की प्राप्ति के योग्य बनता था। राजा के वृद्ध होने पर और उसके द्वारा राजपद के भार को वहन न करने की स्थिति में या राजा की मृत्यु के बाद योग्य राजकुमार का राजपद के लिए निर्वाचन होता था। वृद्ध होने पर राजा दशरथ ने राम को मन्त्रियों के परामर्श से युवराज पद पर अभिषिक्त करने का निश्चय किया था।[5] राजा दशरथ ने अपनी सभा में इस बात को भी स्पष्ट किया था कि यदि उनका प्रस्ताव उचित न हो, तो अन्य विचार भी प्रस्तुत किया जा सकता है।[6] इसी प्रकार राजा नृग ने भी राजपद के लिए अपने पुत्र 'वसु' का नाम पुरोहित, मन्त्रियों के समक्ष प्रस्तावित किया था।[7]

मन्त्री : रामायणानुसार मन्त्रियों की नियुक्ति राजा द्वारा होती थी। मन्त्रियों की नियुक्ति का आधार उनकी विश्वासपात्रता, धर्म, विद्वत्ता, सचरित्रता, कुलीनता आदि गुण थे।[8] इक्ष्वाकुवंशी वीर महामना महाराज दशरथ के उचित गुणों से सम्पन्न आठ मन्त्री थे।

धृष्टिर्जयन्ते विजयः सुराष्ट्रो राष्ट्रवर्धनः।
अकोपो धर्मपालश्च सुमन्त्रश्चाष्टमोऽर्थवित् ।।[9]

राजा दशरथ के मन्त्रिमण्डल में उपर्युक्त अमात्यों के अतिरिक्त वशिष्ठ वामदेव, मार्कण्डेय, मौद्गल्य, कात्यायन, कश्यप, गौतम और जाबालि भी शामिल थे।[10] राम के मन्त्रिमण्डल में वसिष्ठ आदि ब्राह्मणों के अतिरिक्त नारद भी सम्मिलित थे।[11] इनमें वसिष्ठ का पद राजपुरोहित का था।[12]

रामायण में रावण के मन्त्रियों की संख्या का निश्चित उल्लेख नहीं है। रावण की दिग्विजय में उसके साथ मारीच, प्रहस्त, महापार्श्व, महोदर, अकम्पन, निकुम्भ, शुक, सारण, संहलाद, धूमकेतु आदि अमात्यगण थे।[13] रावण के चार मंत्री–दुर्धर, प्रहस्त, महापार्श्व और निकुम्भ परामर्श देने में निपुण एवं मन्त्रज्ञ कहे गए हैं।[14]

रामायण में मन्त्रियों के लिए मन्त्री, अमात्य, एवं सचिव का प्रयोग है। उक्त शब्दों का प्रयोग अनेक स्थलों पर एक ही अर्थ में हुआ है। सुमन्त्र के लिए अमात्य[15], मन्त्री[16] तथा सचिव[17] तथा हनुमान् के लिए सचिव[18] या अमात्य तथा मन्त्री[19] शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त मन्त्रियों को राजकर्तारः भी कहा गया है।[20] मन्त्रियों के लिए भृत्य शब्द का भी प्रयोग रामायण में है। मन्त्री हनुमान् द्वारा लंका में साहसपूर्ण कार्य किये जाने पर राम ने उन्हें सर्वोत्तम भृत्य की कोटि में रखा था।[21]

रामायणकालीन शासन व्यवस्था में मन्त्रियों के पदों का विभाजन रहा होगा एवं शासन संबंधी विभिन्न विभाग इस प्रकार होंगे–

धर्मविभाग– कौसल राज्य में इस विभाग के प्रधानमंत्री वशिष्ठ थे। ये धार्मिक कार्यों को सम्पन्न कराने में प्रधान थे।[22] राज्य के धर्म संबंधी सभी कार्य उनके द्वारा सम्पन्न होते थे। संस्कार, यज्ञ, हवन आदि करना या कराना उनके अधिकार में था।[23]

रक्षा विभाग– इसका प्रधान 'सेनापति' था। अयोध्या में धृष्टि, जयन्त या विजय में से कोई इसका अधिकारी होगा। लंका में सेनापति प्रहस्त इस विभाग का अध्यक्ष एवं संचालक रहा होगा।[24]

गृह विभाग– रामायण के अध्ययन से स्पष्ट है कि ये विभाग राजा के अधिकार में होते थे। ये विभाग गुप्तचरों के द्वारा संचालित होते थे। राजा राम ने अपनी प्रजा का समाचार गुप्तचरों से ज्ञात किया था। राम ने भरत से प्रजा एवं कर्मचारियों के विषय में जानकारी लेते रहने के लिए गुप्तचरों की नियुक्ति विषयक प्रश्न किया था।[25] राजा बालि को गुप्तचरों के माध्यम से ही सुग्रीव और राम की मित्रता के विषय में परिज्ञान हुआ था।[26] राजा रावण ने भी शत्रु के बलाबल को जानने के लिए शार्दूल, शुक तथा सारण को गुप्तचर बनाकर राम की सेना में भेजा था। अतः इन बातों से स्पष्ट है कि गृह विभाग का अध्यक्ष राजा होता था एवं इस विभाग का संचालन गुप्तचरों एवं दूतों के माध्यम से होता था।

मन्त्रिपरिषद् – रामायणानुसार मन्त्रिपरिषद् में अमात्य या सचिव तथा ब्राह्मण मन्त्रियों सहित राजपुरोहित सम्मिलित थे।[27] राजा देश के शासन का संचालन मन्त्रिपरिषद् की सहायता से करता था। राज्य के सभी महत्वपूर्ण मामलों में मन्त्रिपरिषद् से सलाह ली जाती थी। राजा द्वारा मन्त्रिपरिषद् तथा सभा के समक्ष प्रस्ताव रखा जाता था।[28] मन्त्री तथा सभासद् उस पर विचार करते थे। निर्णयान्तर कार्यवाही हेतु मन्त्रिपरिषद् के राज्यस्तरीय मन्त्रियों या अमात्यगणों को कहा जाता था। वे कार्य सम्पन्न कराते थे।[29] इस प्रकार कार्यों का सम्पादन मन्त्रिपरिषद् के सदस्यों द्वारा होता था।

रामायण में मन्त्रिपरिषद् की अनेक बैठकों का उल्लेख है, सर्वप्रथम राजा दशरथ द्वारा पुत्र प्राप्ति के लिए अश्वमेघ यज्ञ करने हेतु मन्त्रिपरिषद् के सदस्यों के साथ मन्त्रणा करने का उल्लेख है।[30] अयोध्या में मन्त्रिपरिषद् की दूसरी बैठक राम के विवाह के विषय में हुई। राजा दशरथ ने मिथिला से प्राप्त राजा जनक के दूतों द्वारा सन्देश लाने पर राम के विवाह के विषय में मन्त्रिपरिषद् के सदस्यों से मन्त्रणा ली थी एवं समर्थन प्राप्त किया था।[31]

मन्त्रिपरिषद् की एक बैठक समुद्र के किनारे राम, सुग्रीव एवं अन्य वानर मन्त्रियों की उपस्थिति में विभीषण के आगमन पर हुई थी। इसमें राम ने विभीषण के आगमन पर उसे शरण देने के लिए मन्त्रियों से अपनी–अपनी सहमति देने के लिए कहा था।[32] लंका में मन्त्रिपरिषद् की बैठक उस समय हुई, जब रावण ने राम और उनकी सेना द्वारा समुद्र पार कर लेने एवं सुबेल पर्वत पर पड़ाव डालने के विषय में सुना।[33] इसमें रावण ने राक्षस मन्त्रियों के साथ मन्त्रियों के साथ करणीय बातों पर विचार–विमर्श किया था।[34]

समीक्षा :

प्रस्तुत शोध पत्र में इस बात का उल्लेख किया गया है कि राज्य व राष्ट्र का मुखिया होने के बावजूद भी राजा अकेला राज्य के सभी कार्यों को व्यवस्थित नहीं कर सकता। राजा को मन्त्रियों, गुप्तचरों, सलाहकारों की आवश्यकता रहती है। वे समय–समय पर राजा को अपना परामर्श देते हैं। किन्तु राजा को चाहिए वह अपने मन्त्रिपरिषद् में अपने विश्वास पात्र लोगों का ही चयन करे। वाल्मीकि रामायण में राजा दशरथ के मन्त्रिपरिषद् में ऐसे ही योग्य व गुणवान् मन्त्रियों का उल्लेख मिलता है। राजनीतिक परम्परा आज भी विद्यमान है, आज राजा के स्थान पर देश के प्रधानमन्त्री व राष्ट्रपति अपने मन्त्रियों के सहयोग से देश को संचालित करते हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. राजा प्रकृतिरंजनात्। रघुवंश महाकाव्यम् 4/12
2. रंजिताश्च प्रजास्सर्वा तेन राजेनि शब्द्यते। महाभारत, शान्तिपर्व
3. वाल्मीकि रामायण 7/76/37, 39, 42, 43
4. वाल्मीकी रामायण 2/67/9
5. वा0 रा0– 2/1/33, 41
6. वा0 रा0–2/2/16
7. वा0 रा0–7/54/5, 8
8. वा0 रा0–2/100/16
9. वा0 रा0–1/7/3
10. वा0 रा0–1/7/4 एवं 2/67/3
11. वा0 रा0–7/74/3, 4
12. वा0 रा0–2/67/4
13. वा0 रा0–7/27/27–31
14. वा0 रा0–5/49/11
15. वा0 रा0–1/7/1, 2, 3
16. वा0 रा0–1/8/4
17. वा0 रा0–1/8/21
18. वा0 रा0–4/2/12, 4/3/23, 27
19. वा0 रा0–4/32/9
20. वा0 रा0–2/67/2
21. वा0 रा0–6/1/6
22. वा0 रा0–1/13/1, 33, 37
23. वा0 रा0–1/8/10 एवं 1/13/5
24. वा0 रा0–6/58/4
25. वा0 रा0– 2/100/37
26. वा0 रा0– 4/15/16
27. वा0 रा0– 1/7/2, 3, 4
28. वा0 रा0–2/2/9, 10, 12, 14, 15, 16
29. वा0 रा0– 1/10/6, 1/12/13, 19 एव 2/3/5
30. वा0 रा0–1/8/2, 3, 6
31. वा0 रा0– 1/68/14, 16–19
32. वा0 रा0– 6/17/33
33. वा0 रा0– 6/31/1, 2, 3
34. वा0 रा0– 6/31/5